अमरात्मा

– शुक्ला चौधुरी

गीता में यह पढ़ा था की **"मनुष्य मरने के बाद शरीर त्याग देता है, मगर आत्मा अमर रहता है, जो कभी नहीं मरता।"** यह कहा जाता है कि केवल तृप्त आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेता है, और अतृप्त आत्मा भटकता रहता है। जिस शरीर को मरने के बाद ठीक तरह से सत्कार नहीं किया जाता, वह आत्मा भटकता रहता है।

यहाँ जापान में आकर बोन उत्सव देखकर और उत्सव के बारे में सुनकर मुझे लगा की यहाँ के लोग भी

हमारी तरह अमरात्मा पर विश्वास करते हैं। बोन उत्सव में जापानी लोग अपने पुर्वजों की आत्मा के शान्ति के लिये प्रार्थना करने उनके समाधी पर जाते हैं। उत्सव के दौरान इधर–उधर नाच गाना चलता है जिसे "बोनोदोरी" कहते हैं। वहाँ हर उम्र के लोग, बच्चों से लेकर वयस्क तक सभी मिलजुल कर नाच गाना करते हैं। मुझे भी यह नाच देखने का मौका मिला। मैदान के बीचोंबीच ऊँचा सा दो तीन परत का मँच बना था जिसके सबसे ऊपर के परत पर बच्चे ढोल बजा रहे थे, कोई गाना गा रहा था, उसके नीचे कुछ लोग किमोनो पहन कर नाच रहे थे। और सबसे नीचे मैदान में मँच के चारों ओर जिसका भी मन चाह रहा था वही आकर नाच रहे थे। वहाँ मेरे दामाद और नाती ने भी नाचने में योगदान दिया। वहाँ का माहौल बहुत ही अच्छा लग रहा था। गाने का धुन बहुत मधुर था। सभी उत्सव का बहुत आनन्द ले रहे थे। छोटे–छोटे बच्चे भी किमोनो पहन कर कुछ खा रहे थे और कुछ खेल रहे थे। यह बोन उत्सव देखकर मैंने यह महसूस किया कि देश हो या विदेश हो सभी आत्मा का पूजन करते हैं। जापान का यह उत्सव, और उनका अमरात्मा पर विश्वास देखकर एक घट्ना मुझे याद आ गया.....

यह कुछ साल पहले की बात है, मैं कुल्लू का दशहरा देखने, कोलकाता से कालका मेल में रवाना हुई थी। कुल्लू का दशहरा देशभर में बहुत प्रसिद्ध है। वहाँ लोग दूर दूर से दशहरा देखने के लिये आते हैं। ट्रेन के कमरे में धीरे धीरे कुछ लोगों से परिचय हुआ। हमलोग एक दुसरे से बातें करते हुए जा रहे थे, लग ही नहीं रहा था कि उनसब से पहली बार मिल रही थी। पता चला कुछ लोग "गया" जा रहे है। अपने पूर्वजों की आत्मा के शान्ति के लिये तर्पन् करने। कुछ मेरी तरह कुल्लू के दशहरे का आनन्द लेने जा रहे थे। और कुछ दिल्ली और चण्डीगढ़। सबसे बातें करते हुऐ सफर में बहुत सी घटनाऐं सुनने को मिल रहीं थी। यह घट्ना मेरे पास बैठी महिला, जिसका नाम माधवी था उसने बताया, जो दिल्ली जा रही थी। उसकी बातों में सच्चाई थी, जिसे सुनकर मुझे भी अमरात्मा पर विश्वास होने लगा।

उन दिनों माधवी के पति को नौकरी के बदली के सिलसिले में दिल्ली जाना था। इसलिये वे सपरिवार दिल्ली जा पहुँचे, वहां एक किराये का घर लिया। गेट से घुसते ही, दाहिने तरफ का घर किराएदार का था और बाएं ओर का, मकान मालिक का। घर में घुसते ही वह कुछ देर के लिये अवाक हुई, एक बड़ा हॉल, पीछे एक छोटा कमरा, और रसोई, वहां से निकलो तो आंगन, इतना बड़ा घर इतने कम किराए में! पास वाला छोटा सा घर मकान मालिक का था। वह सोचने पर मजबूर हुई, क्यूँ मकान मालिक खुद इतने छोटे घर में रहकर, इतने कम किराए में बड़ा घर उनको दे रहे हैं। फिर दिन गुज़रने लगा,माधवी ने अपना घर सजा लिया। दिन के समय जब बच्चे स्कूल जाते और पति दफ्तर, वह घर में अकेली रहती थी। एक दिन दोपहर के समय सब कामकाज खत्म करके जब वह लेटी थी, तो किसी ने आंगन के तरफ का दरवाज़ा खट्खटाया। वह उठकर देखने गई पर वहां कोई न था। वह जा कर लेट गई। फिर एक दिन वैसे ही किसी ने खट्खटाया, दरवाज़ा खोला तो फिर कोई नहीं..... अब उसके मन में थोड़ा डर लगने लगा कि कौन आंगन कि ओर का दरवाज़ा बारबार खट्खटा रहा है, पर दरवाज़ा खोलने पर क्यों सामने नहीं आता। उसने अपने पति को बताया, तो पति ने उसे दरवाज़ा न खोलने की राय दी। अब दो तीन बार और किसी ने दरवाज़ा खट्खटाया पर उसने नहीं खोला।

कुछ दिन बीते....., उस दिन जब वह कपड़े सुखाने छत पर गई, हमेशा छत के कोने में जो छोटा सा चारपाई पड़ा रहता था, उसपर एक वयस्क आदमी सफेद धोती

पहनकर लेटा था, जो इतने लम्बे कद का था कि उसका पैर चारपाई से बाहर लटक रहा था। उसने एक बार के लिये सोचा की हो सकता है, मकान मालिक का कोई रिश्तेदार छत पर आकर लेटा है। मगर उसके छत पर क्यों? यह नहीं हो सकता। माधवी साहस जुटाकर उनके पास गई और पूछा, "आप कौन हैं? बाहर का गेट बन्द है फिर आप अन्दर कैसे आए?" वह वयस्क आदमी, उठ कर बैठे और बोलने लगे कि "मैं इस घर का मालिक था, मुझे अब यहां आने से कोई नहीं रोक सकता, मैं कहीं भी आ जा सकता हूँ।" यह सुनकर वह कुछ ठीठक गई, तो वृद्ध व्यक्ति ने कहा, "मेरे पास बैठो, और मेरी बात मन लगाकर सुनो,"तो माधवी बैठ गई, वे फिर बोलने लगे, "मैं यहां अकेला रहता था। एक बार मेरी तबियत बहुत खराब हुई तो मेरा बाहर जाना बिल्कुल बंद हो गया। कभी–कभी पड़ोसी कुछ कुछ खाने को दे जाते थे तो खा लेता था, धीरे–धीरे वह भी बन्द हो गया। फिर यह चारपाई ही मेरा साथी रह गया। करीब एक साल बाद मेरे दूर के रिश्तेदार ने आकर मेरी अस्थियाँ देखीं, तो उसने उठाकर मुझे पानी में बहा दिया और मेरा सब सामान पास वाले खाली ज़मीन में एक आम के पेड़ के नीचे दबा दिया। फिर यह घर बेचकर पैसा लेकर चला गया। उसने ठीक से मेरा अन्तिम संस्कार नहीं किया।" फिर उसने पूछा "क्या तुम मेरी आत्मा की शान्ति के लिये पूजन कर सकते हो? मेरे पास बहुत धन दौलत है।" माधवी ने पूछा "कैसे, और कहाँ।" उस वृद्ध आदमी ने बताया "जिस ज़मीन में मेरा सब समान सन्दूक में दबाया था, उसके अन्दर एक थैली में बहुत से मोहरें हैं। तुम उसे निकाल कर, मेरे लिये पूजन करोगी, तो मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगाा। तुम करोगी ना? अब माधवी थोड़ा सोचकर बोली, "हाँ, जरूर मैं पूजा करूंगी।"

फिर वह सीधे मकान मालिक के घर पहुँची पूछताछ करने के लिये, उनलोगों ने बताया कैसे, और किससे उन्होंने वह मकान खरीदा था। जब वे लोग मकान में घुसे थे, तब वह चारपाई एक कमरे में ही मौजूद था। जो भी उसपर सोता था, उसको रात में कोई नीचे उतार देता था। तंग आकर उन्होंने चारपाई उठाकर छत पर रखवा दिया था, और दिवार पर एक चित्र भी टंगा था, जिसे तहखाने में रखवा दिया था। अब माधवी ने वह चित्र देखना चाहा, तो मकान मालिक तहखाने से चित्र उठाकर लेकर आए। चित्र देखकर माधवी के पैरों के नीचे से जैसे ज़मीन खिसक गई। उसने लपक कर उनके हाथों से तस्वीर लिया और बोली कि "छत पर यही थे, मैंने इनसे ही बात किया था। इसका मतलब उस वृद्ध आदमी ने जो भी बोला, वह सत्य है। मगर पास वाला ज़मीन तो अब खाली नहीं है, उसपर किसी का घर बन गया है। अब क्या करें?" मकान मालिक ने बोला "चलो पड़ोसीयों से बात करके आते हैं।"

सब मिलकर पास वाले घर में गए, उन्हें सबकुछ विस्तार से बताया, तो वे बोले "हां, एक आम का पेड़ पिछवाड़ में है।" जो उनके मकान बनाने से पहले से था। उन्होंने वहां खोदने की अनुमति दे दी। अब सभी मिलकर पड़ोसीयों के घर के पीछे गए, और खोदना आरम्भ किया, ४–५ फुट खोदने पर ही उन्हें एक सन्दूक मिला, सबने मिलकर उसे खोला, बहुत से कागज़ादों के साथ उन्हें मोहरों का थैला भी मिला। फिर माधवी ने सब आसपास के लोगों को बुलाकर, उस वृद्ध आदमी के कहे अनुसार, उनकी आत्मा की शान्ती के लिये बहुत बड़ा पूजन किया। बहुत लोगों को बुलाकर भोजन कराया, उसके बाद वह बहुत साल तक उसी मकान में रही मगर फिर कभी कोई परेशानी नहीं हुई।

माधवी की यह घटना सुनकर मुझे विश्वास हो गया कि आत्मा अमर है। जो कभी नहीं मरता। ❑

– सद्व्यवहार में शक्ति है। जो सोचता है कि मैं दूसरों के काम आ सकने के लिये कुछ करूँ, वही आत्मोन्नति का सच्चा पथिक है।

– जीवन के आनन्द गौरव के साथ, सम्मान के साथ और स्वाभिमान के साथ जीने में है।

– हम क्या करते हैं, इसका महत्त्व कम है; किन्तु उसे हम किस भाव से करते हैं इसका बहुत महत्त्व है।